B-2

L-11

दिनांक
07-11-23

राष्ट्रवाद

राज्य → मूर्त/भौतिक
- निश्चित भौगोलिक क्षेत्र
- निश्चित जनसंख्या
- सरकार
- सम्प्रभु

राष्ट्र → अमूर्त/अभौतिक
- भावनात्मक इकाई
- एकत्व की भावना

- राष्ट्र के लिए एक ऐसी भावना का होना आवश्यक होता है जो व्यक्तियों के समूह को आपस में जोड़ सके। और यह भावना संस्कृति, परंपरा, रीति-रिवाज, भाषा आदि किसी भी कारक के आधार पर जन्म ले सकती है। वस्तुतः राष्ट्र का सार है "हम सब एक हैं"।

- राष्ट्रवाद कोई अचानक उत्पन्न होने वाली घटना नहीं है बल्कि एक दीर्घकालिक विकासशील प्रक्रिया मानी जाती है आधुनिक भारतीय इतिहास में जैसे-जैसे ब्रिटिश शासन विभिन्न अवस्थाओं से गुजरता गया वैसे-वैसे भारतीय राष्ट्रवाद भी परिपक्व होता गया कुछ विद्वान इसे प्रेरक अनुक्रियावाद सिद्धान्त (Stimulative-Responsive theory) से भी परिभाषित करते हैं जिसका अर्थ है- अंग्रेजों ने जिस तरह की अवसंरचना व्यवस्था व विचार भारत में स्थापित किये उसी पर अनुक्रिया करते हुये भारतीय राष्ट्रवाद विकसित होता रहा।

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR

- 1940 के दशक में भारतीय राष्ट्रवाद इस विस्फोटक स्थिति में आ गया कि अंग्रेजों को भारत छोड़ना पड़ा और आज के भारत में राष्ट्रवाद का स्वरूप इस रूप में बदला है कि एक इकाई के रूप में भारत की प्रगति व विकास के लिए तथा एकता व अखण्डता के लिए कुछ कर गुजरने की भावना ही आधुनिक राष्ट्रवाद को अभिव्यक्त करती है।

राष्ट्रवाद: उत्पत्ति एवं विकास

- भारतीय राष्ट्रवाद विश्व इतिहास के लिए भी एक आकर्षक विषय रहा है क्योंकि भारत की आजादी की लड़ाई ने एशिया व अफ्रीका के कई देशों की आजादी का मार्ग प्रशस्त किया। भारतीय राष्ट्रवाद की उत्पत्ति व विकास में बहुआयामी कारक उत्तरदायी थे -

भारतीय राष्ट्रवाद की उत्पत्ति का प्राथमिक कारक विदेशी औपनिवेशिक सत्ता की उपस्थिति की जिसका उद्देश्य भारतीय संसाधनों का अधिकतम शोषण करना करना था और जब यह शोषण इस हद तक आ पहुंचा कि भारतीयों का जीवन कठिन हो गया तो औपनिवेशिक सत्ता के विरुद्ध उत्पन्न चेतना ने भारतीय राष्ट्रवाद को जन्म दिया।

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR

- आधुनिक शिक्षा व नवोदित मध्यम वर्ग की भूमिका :-

- 1835 में मैकाले ने नई शिक्षा नीति के तहत अंग्रेजी शिक्षा को अनिवार्य बना दिया, उसका उद्देश्य भारतीयों को मानसिक रूप से गुलाम बनाना और कम वेतन पर अधीनस्थ कर्मचारी प्राप्त करना था।

किन्तु दूसरी तरफ भारतीय राष्ट्रवाद की उत्पत्ति में आधुनिक शिक्षा की भूमिका को नकारा नहीं जा सकता क्योंकि एक तरफ गणित, इंजीनियरिंग व भौतिकी जैसे विषय पढ़ाये गये तो दूसरी तरफ राजनीतिक विज्ञान व दर्शनशास्त्र जैसे विषयों के अध्ययन से भारतीय न सिर्फ वैज्ञानिक व तकनीकी पक्षों से अवगत हुये बल्कि उन्हें समकालीन राजनैतिक विचारों व सिद्धान्तों का भी ज्ञान होने लगा तथा अब वे अन्य समाजों से अपनी तुलना करने में सक्षम हो गये जिससे शिक्षित भारतीयों को यह एहसास होने लगा कि औपनिवेशिक शासन भारतीय हितों व अधिकारों के प्रति संवेदनशील नहीं है बल्कि यह व्यवस्था तो भारतीय संसाधनों का शोषण ही करती जा रही है।

आधुनिक शिक्षा प्रणाली ने ब्रिटिश शासन की जरूरत के अनुसार एक नई आर्थिक व्यवस्था के तहत एक नया सामाजिक वर्ग पैदा किया जिसे मध्य वर्ग कहा गया, जो तुलनात्मक रूप से अन्य सामाजिक वर्गों से अधिक जागरूक था, इनके उद्देश्यों में एकता की भावना निहित

KGS IAS KHAN GLOBAL STUDIES Most Trusted Learning Platform KHAN SIR

थी एवं ये बदलावों के प्रति भी संवेदनशील थे अतः शीघ्र ही अपने अधिकारों व हितों की प्राप्ति के लिए इन्होंने एकजुट होकर ब्रिटिश सत्ता से अपने अधिकारों की मांग शुरू कर दी अर्थात भारतीय राष्ट्रवाद मुखर होने लगा।

आधुनिक मूल्यों को समझते हुये इस वर्ग का आकर्षण लोकतांत्रिक आदर्शों के प्रति बढ़ना स्वभाविक ही था और जब इन्होंने बेन्थम व मिल जैसे विचारकों को पढ़ा और ग्लेडस्टोन जैसे राजनीतिज्ञों की चर्चा सुनी तो इनकी राजनैतिक चेतना बढ़ने लगी और ये भारत में भी लोकतांत्रिक मूल्यों की स्थापना की चाह रखने लगे। और इसी सन्दर्भ में व्यक्तिगत व सांगठनिक तरीके से इन्होंने भारत की आवाज उठाना शुरू कर दिया।

उल्लेखनीय है कि नौरोजी जैसे विचारक ने ब्रिटिश लोकतंत्र को आदर्श माना था तथा स्वतंत्रता, समानता जैसे आधुनिक मूल्यों, मौलिक अधिकारों को उपलब्ध कराये जाने के कारण ब्रिटिश शासन प्रणाली में इनकी आस्था बड़ी थी और जिस तरह स्कॉटलैण्ड व वेल्स में ब्रिटिश प्रणाली लोकतांत्रिक अधिकार उपलब्ध करा रही थी वैसी ही उम्मीद नौरोजी भारत के लिए भी कर रहे थे किन्तु जब उन्होंने इन मूल्यों को भारत में अनुपस्थित पाया तो औपनिवेशिक शासन को इन्होंने "अनब्रिटिश रूल इन इंडिया" कहा।

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR

→ राष्ट्रवाद में प्रेस व साहित्य की भूमिका:-

- प्रेस जनता की आकांक्षा को सरकार के समक्ष रखने का सबसे लोकप्रीय माध्यम है और इसकी महत्ता इस तथ्य से भी स्पष्ट हो जाती है कि इसे लोकतंत्र का चौथा स्तम्भ कहा जाता है। औपनिवेश शासन प्रणाली के दौरान प्रेस व साहित्य राष्ट्रवाद की प्रमुख आवाज बन गये क्योंकि विभिन्न राष्ट्रवादी नेताओं ने इसी माध्यम से अपने विचारों को जनता तक पहुँचाया।

प्रेस इतना सशक्त माध्यम था कि किसी भी विचारधारा का नेतृत्वकर्ता क्यों न रहा हो, सभी ने इसका सहारा लिया- गांधी - भगत सिंह, तिलक - गोखले, तथा जिन्ना व सावरकर आदि सभी ने वैचारिक मतभेदों के बावजूद प्रेस व साहित्य के माध्यम से ही जनता व सरकार दोनों को अपने विचारों से अवगत कराया।

कहा जाता है कि साहित्य समाज का दर्पण होता है और समाज की भावनाओं को प्रस्तुत करने का सशक्त माध्यम भी होता है इसीलिए महत्वपूर्ण नेताओं व विद्वानों ने कहानी, नाटक, उपन्यास आदि के द्वारा भारतीय समाज को जागरुक बनाने की कोशिश की और यह चेतना प्रसारित करने का प्रयास किया कि औपनिवेशिक शासन भारतीय हितों के विरुद्ध कार्य कर रहा है अतः अपने हितों की रक्षा के लिए हमें एकजुट होना होगा। भारतेन्दु हरिश्चन्द ने "भारत दुर्दशा" लिखकर तो बंकिमचन्द्र चटर्जी ने "आनंद मठ" में वन्दे मातरम के मंत्र को भारतीय राष्ट्रवाद की आवाज बना दिया।

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform

प्रेस के विकास से जब क्षेत्रीय भाषाओं में भी समाचार पत्र व साहित्य प्रकाशित होने लगे तो आम जनता भी औपनिवेशिक शोषण की गतिविधियों से अवगत होने लगी तथा अपने हितों की मांग के लिए राष्ट्रवादी नेतृत्व-मतों का समर्थन करने लगी।

- गौरवमयी अतीत की खोज तथा सामाजिक-धार्मिक सुधार आन्दोलन :-

- औपनिवेशिक शासन के दौरान भारतीय संस्कृति व विचारों को समझने के लिए अंग्रेजों ने पुरातात्विक खोजों व प्राचीन भारतीय ग्रंथों के अनुवाद की प्रक्रिया को आगे बढ़ाया, जिसमें सर विलियम जोंस के नेतृत्व में "एशियाटिक सोसाइटी ऑफ बेंगॉल" की विशेष भूमिका रही।

इन खोजों व विश्लेषणों से यह तथ्य सामने आया कि प्राचीन काल में भारत की स्थिति विश्व गुरू के समकक्ष थी और वह सभ्यता व संस्कृति का अग्रदूत था अतः ऐसी जानकारी के बाद भारतीयों के स्वाभिमान में बढ़ी हुई और उनका आत्मविश्वास लौटा स्मरणीय है कि अंग्रेजों ने बड़ी चालाकी से नस्लीय श्रेष्ठता तथा यूरोप की अजेयता का मिथक भारतीयों के मन में स्थापित कर दिया था जिससे भारतीयों की मनोदशा नकारात्मक हो गयी थी और हम अंग्रेजों के समक्ष अपने आपको हीन मानने लगे थे।

किन्तु जब भारतीय अतीत के गौरव की पहचान हुई तो

न सिर्फ अंग्रेजों का प्रचारित मिथक टूटा बल्कि भारतीयों में एक नई ऊर्जा संचारित हुई और भारतीय राष्ट्रवाद जुझारू रूप धारण करने लगा।

इसी समय भारत में सामाजिक-धार्मिक सुधार आन्दोलनों ने भारतीयों की मानसिक जड़ता को झकझोर दिया जिसमें विवेकानन्द जैसे विचारकों ने न सिर्फ भारतीय दर्शन व ज्ञान की पताका पूरे विश्व में लहराई बल्कि उनके कथन "कायरता मृत्यु के समान है व शक्ति ही जीवन है," ने विशेषत: युवाओं को शोषण न सहने और प्रतिरोध करने की प्रेरणा दी। वस्तुत: 19 वीं 20 वीं सदी के सामाजिक-धार्मिक सुधार आन्दोलनों ने गतिहीन हो चले भारतीय समाज, जिसमें रूढ़िवादिता का बोलबाला था, पर प्रश्न चिन्ह लगाकर भारतीय समाज को पुन: गतिशील बनाने का प्रयास किया और जब हमारा विश्वास अपने समाज व संस्कृति में पुन: मजबूत होने लगा तो औपनिवेशिक शासन के विरुद्ध भारतीय राष्ट्रवाद और प्रखर होने लगा।

प्रश्न- भारत ने अपनी गुलामी की जंजीरों को पश्चिमी हथौड़े से तोड़ डाला।

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
© KHAN SIR ©